सेब
(Seb)

Dr. Waseem Siddiqi
डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8Th Road North
Ahmadi.61008
Kuwait

काशिफ़ की जीप सरवही क़स्बे में दाख़िल हो गयी थी। अब उसे करीब 50 किलो मीटर और चलना था फिर वह जगह आ जाती जहाँ चूने के पत्थरों के क़ाफी ज़खीरे थे और काशिफ़ जो कि कई कानों का मालिक था। उसने वहाँ पर काफ़ी ज़मीने लीज़ पर अभी हाल ही में ली थी। अब उसे तमाम रास्ता कच्चे ऊबड़–खाबड़ रास्तों से होते हुये और गाँव से गुज़रते हुये तय करना था। उसने सोचा यही कहीं खाना खा लिया जाये वरना उसे आगे कुछ भी नहीं मिलेगा। उसने अपनी जीप सड़क के किनारे रोक दी सड़क के दोनों तरफ़ कई खाने के ढाबे थे वह एक ढ़ाबे में दाखिल हो गया वहाँ कई चारपाइयाँ पड़ी हुई थीं। जिन पर लकड़ी के तख़्ते पड़े हुये थे। उसने देखा कि लोग उन्हीं चारपाइयों पर बैठे खाना खा रहे हैं जो खाना खा चुका है वह वहीं बैठा हुआ उंगली से रगड़–रगड़ कर दाँत साफ़ करके कुल्ली कर रहा है। उसे एक दम बड़े ज़ोर की मतली आयी वह वहाँ से बाहर निकल आया उसने सोचा अब किसी और ढाबे में जाना फ़ुजूल है।

सब एक से बढ़कर एक होंगे लेकिन भूक का कुछ तो इन्तिज़ाम करना ही था। वह पास ही खड़े एक ठेले वाले के पास पहुँच गया जो फल बेच रहा था यह सेब क्या हिसाब है लाल–लाल सेब उसे अपनी तरफ़ मुतावज्जे कर रहे थे। उसने कहा 15 रूपया किलो। काशिफ़ ने कहा बहुत महँगे हैं।

एक दाम है बाबू जी एक पैसा भी कम नहीं होगा दुकान दार बहुत अखड़ था। काशिफ का जी चाहा कि उन्हीं सेबों में से एक उठाकर दुकानदार के सर पर रसीद करे लेकिन उसने अपनी इस ख़्वाहिश का गला दबा दिया और एक किलो सेब तौलने का हुक्म सादिर कर दिया। दुकानदार ने तराजू सीधी की और सबसे पहले कई जगहों के दाग़दार सेब उठाकर तराजू में रख दिये। अब काशिफ़ को वाक़ई गुस्सा आ गया उसने दुाकन दार को अल्टी मेटम दिया कि वह किसी सेब को हाथ न लगाये और ख़ुद ठेले में से सेब उठा कर तराजू में रखने लगा काफी अच्छे सेब थे वह ख़राब वाला सेब कमबख़्त ने काफी छाँटकर निकाला होगा काशिफ़ ने सोचा तब ही स्कूल के दो बच्चे आकर ठेले के पास खड़े हो गये सेब क्या हिसाब हैं छोटे वाले बच्चे ने दुकानदार से पूछा।

पन्द्रह रूपया किलो दुकानदार ने बच्चे से ऐसे कहा जैसे वह बच्चों को डाँट रहा हो दोनों बच्चे एक एक झोला लिये हुये थे। जिसमें किताबें थीं और उन दोनों ही के थैलों पर रौशनाई के निशान थे। काशिफ़ उन बच्चों को दिलचस्पी से देखने लगा। कई जगह से उधड़ी नैकर और शिक्न आलूद कमीज़ पहने और हाथ रौशनाई से रंगे हुये उन बच्चों को देखकर उसे अपना बचपना याद आ गया। वह भी ऐसा ही हुलिया बनाये चंगी के स्कूल में पढ़ने जाया करता था।

दोनो भाई हो, काशिफ़ ने पूछा दोनो की शक्ल मिल रही थी। एक मुश्किन से आठ साल का होगा और दूसरा पाँच साल का काशिफ़ ने उनकी उम्र का अन्दाज़ा लगाया दुकानदार ने एक किलो सेब तौल कर लिफ़ाफ़े में डाल दिये अरे लेना है या ऐसे ही इन सेबों को तकते जा रहे हो दुकानदार ने उन बच्चों से कहा।

आठ आने का सेब दे दो बड़े वाले बच्चे ने जेब से एक अठन्नी निकाल कर दुकानदार की तरफ़ बढ़ाई भईया वह वाला सेब लेना छोटा वाला बच्चा एक सेब की तरफ़ इशारा करके कहने लगा। उस ने अपनी समझ से

बड़ा अच्छा सेब देख लिया था और उसकी आँखें उस सेब को देखकर चमकने लगीं। आठ आने का सेब कहीं मिलता है भाग जा दुकानदार ने उन बच्चों को डाँट दिया बड़े वाले बच्चे ने अठन्नी अपनी जेब में वापस रखी और दोनों बच्चे वहाँ से चल दिये। छोटे वाले बच्चे की आँख की चमक एक दम गायब हो गयी।

काशिफ़ उन बच्चों को जाता हुआ देखता रहा था कितनी मायूसी से दोनों बच्चे वहाँ से गये उसका जी चाहा कि उन बच्चों के बुला कर अपने थैले में से एक एक सेब निकाल कर उन दोनों को दे दे लेकिन वह दोनों तो स्कूली बच्चे थे कोई फ़क़ीर तो थे नही वह दुकानदार से सेब खरीदने आये थे। माँगने नहीं अरे यार कोई छोटा सा सेब निकाल कर दे देते उन बच्चों को ख़्वाहमख्वाह लौटा दिया। काशिफ़ ने दुकान दार से कहा अरे कैसे दे देते कोई भी सेब तो एक रूपया से कम नहीं है ऐसे ही बाँटते रहे तो खायेंगे क्या दुकानदार ने दो टूक जवाब दिया।

काशिफ़ ने सोचा यह भी सही कह रहा है अच्छा ऐसा करो यह लो मेरी तरफ़ से पचास पैसे मैं उन बच्चों को भेज रहा हूँ पचास पैसे का एक सेब दे देना वह दुकानदार को दो सेब के भी दाम दे सकता था लेकिन आठ आने में दो सेब कैसे मिल जाते वह उन बच्चों को हक़ीक़त की दुनिया में रहने देना चाहता था। उसने दुकानदान को पचास पैसे पकड़ा दिये और उन बच्चों को देखने लगा छोटी सी जगह थी बच्चे इतनी आसानी से कैसे नज़रों से ओझल होते दोनों बच्चे गाँव की तरफ़ जाने वाले कच्चे रास्ते में चले जा रहे थे। एक दूसरे के गले में बाहें डाले अरे बच्चों सुनों काशिफ़ उन बच्चों की तरफ़ तेज़ी से बढ़ा दोनों बच्चे ठिठुक कर तेज़ी से रूक गये थे। काशिफ़ को वह पहचान गये थें अभी अभी तो उन्होंने उसे सेब ख़रीदते देखा था अरे तुम लोग जाकर सेब ख़रीद लो मैंने दुकानदार से कह दिया है वह तुम्हें आठ आने में सेब दे देगा। काशिफ़ ने उन बच्चों से कहा दोनों बच्चे उसे हैरत से देख रहे थे फिर बड़ा वाला बच्चा बोला अठन्नी की तो हमने मूँगफली ख़रीद ली। अब काशिफ़ की नज़रें उनकी जेबों पर पड़ीं उनके नेकर की छोटी छोटी जेबे मूँगफली से भरी थीं। अरे काशिफ़ की समझ में नहीं आया कि अब क्या करे दोनों बच्चे फिर चल दिये और काशिफ़ लिफ़ाफ़ा हाथ में लिये भारी क़दमों से अपनी जीप की तरफ़ चल दिया सेब का वह लिफ़ाफ़ा उसे एक बोझ महसूस होने लगा उसको खाने की ख्वाहिश एक दम ख़त्म हो गयी थी। उसका जी चाह रहा था कि वह सेब से भरा लिफ़ाफ़ा उठाकर फेंक दे वह अपनी जीप में आकर बैठ गया। उन बच्चों की शबीह उसके ज़हेन में उभरती रही उसने स्ट्रेंग पर अपना सर रख दिया फिर वह अपने माज़ी में खो गया।

उसका स्कूल घर से ढाई किलोमीटर के फ़ासले पर था वह उन बच्चों की तरह कई जगहों से सिली हुई नेकर व शर्ट पहने हुये स्कूल जाने के लिये निकलता था। स्कूल जाने के लिये उसे शहर के अच्छे बाज़ारों से होकर गुज़रना पड़ता था उसकी जेब में रोज़ दस पैसे होते थे। जिसको वह नेकर में बार बार हाथ डाल कर देख लेता था कि कहीं गिर तो नहीं गया फिर जब स्कूल में इन्टरवल होता था तो वह दस पैसे उसकी जेब से निकल कर उसकी मुट्ठी में आ जाते थे जिसकी वह कभी मूँगफली कभी खीरा या ककड़ी या कभी अमरूद ले लेता था। वहाँ सेब अंगूर भी मिलते थे और एक बार उसने भी दस पैसे में सेब ख़रीदना चाहा था नतीजा वही हुआ था जो उन बच्चों का हुआ था।

बाबू जी का भला हो कि सदा सुनकर उसके ख़्यालात का सिलसिला एक दम टूट गया। एक भिकारन जीप के दरवाज़े के पास खड़ी थी और चार पाँच बच्चे उससे चिपटे हुये थे। काशिफ़ ने सेब का लिफ़ाफ़ा उस भिकारन को पकड़ा कर गाड़ी स्टार्ड कर दी थी।

.....☆.....